

आपदा जोखिम ब्यूनीकरण कैलेंडर 2017



श्री नीतीश कुमार
मुख्यमंत्री, बिहार-सह-अध्यक्ष
बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण



नव वर्ष की
हार्दिक शुभकामनायें



बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण

- 'बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण' का गठन आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005 (53 की धारा 14 के अंतर्गत) के प्रावधानों के अंतर्गत बिहार सरकार द्वारा जारी अधिसूचना संख्या 3449/आ०प्र० दिनांक 06-11-2007 के अंतर्गत हुआ है।
- माननीय मुख्यमंत्री, बिहार प्राधिकरण के पदेन अध्यक्ष तथा मुख्य सचिव पदेन सदस्य एवं मुख्य कार्यपालक पदाधिकारी हैं।
- प्राधिकरण में एक उपाध्यक्ष समेत कुल 9 सदस्यों की नियुक्ति का प्रावधान है।
- राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण, उपरोक्त 2005 के अधिनियम के उपबंधों के आलोक में राज्य में आपदा प्रबंधन के लिए नीतियां एवं योजनाएं बनाने के लिए उत्तरदायी है।
- आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005 की धारा 18 के अंतर्गत राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण को यह दायित्व सौंपा गया है कि वह राज्य में आपदा प्रबंधन की नीतियों एवं योजनाओं का सूत्रण निम्नवत् सुनिश्चित करे :-
 - (क) राज्य आपदा प्रबंधन नीति निर्धारण करना।
 - (ख) राष्ट्रीय प्राधिकरण द्वारा निर्धारित मार्गदर्शक सिद्धांतों के अनुसार राज्य योजना का कार्यान्वयन करना।
 - (ग) राज्य सरकार के विभागों द्वारा तैयार की गयी आपदा प्रबंधन योजनाओं का अनुमोदन करना।
 - (घ) राज्य सरकार के विभागों द्वारा उनकी विकास योजनाओं में आपदा जोखिम न्यूनीकरण के उपायों को समाहित कराने के लिये मार्गदर्शक सिद्धांत निर्धारित कराते हुए आवश्यक तकनीकी सहायता उपलब्ध कराना।
 - (ङ.) आपदा न्यूनीकरण (Mitigation) और तैयारी उपायों के लिए निधियों की व्यवस्था करने की अनुशंसा राज्य सरकार को करना।
 - (च) राज्य के विभिन्न विभागों की विकास योजनाओं की समीक्षा कर सुनिश्चित करना कि आपदाओं की रोकथाम एवं न्यूनीकरण के उपाय इन योजनाओं में शामिल किये गये हैं।
 - (छ) राज्य सरकार के विभागों द्वारा आपदा न्यूनीकरण (Mitigation), क्षमतावर्द्धन और तैयारी के लिए किये जा रहे उपायों की

समीक्षा करना एवं आवश्यकतानुसार मार्गदर्शक सिद्धांत जारी करना।

- उपरोक्त के आलोक में आपदा प्रबंधन अधिनियम की धारा 19 के अनुसार राज्य के आपदा प्रभावितों को राहत के लिये मानदण्ड तय करना (परंतु यह मानदण्ड किसी भी दशा में 'राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन प्राधिकरण' द्वारा निर्धारित मानदण्ड से कम नहीं होना चाहिये)।
- 'आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005' के अनुसार प्राधिकरण की राज्य कार्यकारिणी समिति को आपदा प्रबंधन के क्षेत्र में समन्वयन की सुपरिभाषित जवाबदेही सौंपी गयी है।
- प्रत्येक जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा तैयार किये गये आपदा प्रबंधन योजना का अनुमोदन करना।
- 'आपदा प्रबंधन अधिनियम, 2005' के अनुसार किसी भी आपदा के उत्पन्न होने की दशा में यदि राज्य प्राधिकरण संतुष्ट है कि बचाव या राहत के लिये किसी सामग्री की तुरंत आवश्यकता है, तो वह संबंधित विभाग अथवा प्राधिकार को यह निदेश दे सकता है कि वह आकस्मिकता से निपटने के लिये सामग्री या संसाधन की व्यवस्था करे या ऐसे मामलों में निविदा आमंत्रित करने की शर्त शिथिल रखे।

विद्यालयों के लिए निर्देश :-

- स्कूली बच्चों के साथ प्रत्येक शनिवार को प्रार्थना के समय महीनेवार संबंधित आपदाओं एवं उनके प्रबंधन के विषय में चर्चा की जाये और बच्चों को उन उपायों को अपनाने एवं परिवार के साथ चर्चा करने के लिए प्रेरित किया जाये।
- कुछ आपदायें किसी महीने से सीधे-सीधे संबंधित नहीं होती हैं और वे कभी भी आ सकती हैं, जैसे-भूकम्प, अगलगी, सड़क दुर्घटना, रेल दुर्घटना आदि। अतः इन आपदाओं की भी चर्चा निरंतर पूरे वर्ष बच्चों के बीच की जाये।

परिकल्पना एवं मार्गदर्शन : श्री व्यास जी, उपाध्यक्ष ; रूपांकन एवं संपादन : श्रीमती मोनीषा दूबे, वरीय संपादक ; शोध : श्रीमती मोनीषा दूबे ; डॉ. मधुवाला, परियोजना पदाधिकारी (प्राकृतिक आपदा)
लेआउट डिजाइन : श्री यूसुफ अली ; बिहार राज्य पाठ्य पुस्तक निगम लि. द्वारा आदेशित

शीत लहर



पर्यावरण से मत करो खिलवाड़ । वरना आपदा आएगी बार-बार ॥

JANUARY

जनवरी

पौष-माघ

2017

MON TUE WED THU FRI SAT SUN

						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30	31	(9-16 जनवरी) सड़क सुरक्षा सप्ताह	(15-21 जनवरी) भूकम्प सुरक्षा सप्ताह			

नव वर्ष

गुरु गोविन्द सिंह जी का 350 वाँ प्रकाशोत्सव

गुरु गोविन्द सिंह जी का जन्म दिवस

मकर संक्रांति

कर्पूरी ठाकुर जयंती

गणतंत्र दिवस

01 जनवरी

03-04 जनवरी

05 जनवरी

14 जनवरी

24 जनवरी

26 जनवरी

शीत लहर

राज्य में ठंड के मौसम में सामान्यतया दिसम्बर माह के अंतिम सप्ताह से जनवरी माह के तीसरे सप्ताह तक शीत लहर का प्रकोप रहता है। सामान्यतया यदि तापमान 7 डिग्री से० से कम हो जाय तो इसे शीत लहर की स्थिति माना जाता है। शीत लहर से मानव एवं पशुओं के स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है।



पौष-माघ
JANUARY
जनवरी
2017

शीत लहर या ठंड लगने पर व्यक्ति में निम्न लक्षण उत्पन्न होते हैं :-

- शरीर का ठंडा होना एवं अंगों का सुन्न पड़ना।
- अत्यधिक कपकपी या ठिठुरना।
- बार-बार जी मिचलाना या उल्टी का होना।
- अर्द्धबेहोशी की स्थिति अथवा बेहोश होना।

शीत लहर या ठंड से बचाव के उपाय :-

- अनावश्यक घर से बाहर न जाएँ और यथासम्भव घर के अंदर सुरक्षित रहें (विशेषकर वृद्ध एवं बच्चे)।
- यदि घर से बाहर जाना आवश्यक हो तो समुचित ऊनी एवं गर्म कपड़े पहन कर ही निकलें। बाहर निकलते समय अपने सिर, चेहरे, हाथ एवं पैर को भी उपयुक्त गर्म कपड़े से ढक लें।

- समाचार पत्र/रेडियो/टेलीविजन के माध्यम से मौसम की जानकारी लेते रहें।
- शरीर में उष्मा के प्रवाह को बनाये रखने के लिए पौष्टिक आहार एवं गर्म पेय पदार्थों का सेवन करें।
- बन्द कमरों में जलती हुई लालटेन, दीया एवं कोयले की अंगीठी का प्रयोग करते समय धुएँ के निकास का उचित प्रबंध करें। प्रयोग के बाद इन्हें अच्छी तरह से बुझा दें।
- हीटर, ब्लोअर आदि का प्रयोग करने के बाद स्विच ऑफ करना न भूलें अन्यथा यह जानलेवा हो सकता है।
- राज्य सरकार शीत लहर के समय रात्रि में सार्वजनिक स्थानों पर अलाव की व्यवस्था करती है, जिसका लाभ उठाकर शीत लहर से बचा जा सकता है।
- राज्य सरकार द्वारा शहरी क्षेत्रों में बेघरों के लिए रैन-बसेरों का प्रबंध किया जाता है, जहाँ कंबल/बिस्तर आदि उपलब्ध रहते हैं। इन सुविधाओं का प्रयोग करें।
- उच्च रक्तचाप, मधुमेह के मरीज तथा हृदय रोगी चिकित्सक की सलाह जरूर लेते रहें तथा सामान्यतया धूप होने पर ही घर से बाहर निकलें।
- विशेष परिस्थिति में नजदीकी सरकारी अस्पताल से अविलम्ब चिकित्सा परामर्श लें। एम्बुलेन्स की सहायता लेने हेतु दूरभाष संख्या-102 या 108 पर सम्पर्क करें।
- पशुओं के बथान गर्म रखने की समुचित व्यवस्था करें। पशुओं को ठंड लगने पर पशु अस्पताल/पशु चिकित्सक की सलाह लें।

सुरक्षित घर
सुरक्षित परिवार



FEBRUARY
फरवरी 2017
माघ-फाल्गुन

MON TUE WED THU FRI SAT SUN

	1	2	3	4	5	
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28					

आपदा प्रबंधन के उपायों को जाने । खुद को पूर्ण सुरक्षित मानें ॥

वसंत पंचमी
संत रविदास जयंती
महाशिवरात्रि

01 फरवरी
10 फरवरी
24 फरवरी

सुरक्षित घर - सुरक्षित परिवार

भूकम्प से लोग नहीं मरते, भूकम्प में कमजोर भवनों के ढहने से मृत्यु होती है। भूकम्प से होने वाली हानि को कम करने के लिए भवनों को भूकम्परोधी बनवायें एवं वर्तमान भवनों को भूकम्प की दृष्टि से सुदृढ़ करें।

भूकम्परोधी निर्माण के लिए :-

भवन सदा उँची जगहों एवं ठोस जमीन पर बनाने चाहिए। सरल आयताकार के आकार-प्रकार के भवन बनायें। भवन के Plan, Elevation, यहाँ तक कि दरवाजों एवं खिड़कियों को भी यथा सम्भव Symmetrical रखना चाहिए। भवन निर्माण में सदैव अच्छी गुणवत्ता की सामग्रियों का उपयोग करना चाहिए एवं मानक निर्माण विधि का पालन करना चाहिए।

ईंट जोड़ाई के भारवाहक दीवार पर छत रखकर बनाए जाने वाले भवनों के लिए:-

दीवार की मोटाई कम से कम 10 इंच होनी चाहिए; सपाट क्षैतिज आर.सी.सी. छत तुलनात्मक रूप से अच्छी होती है; दरवाजों



माघ-फाल्गुन
FEBRUARY
फरवरी
2017



एवं खिड़कियों के आकार कम से कम रखें; सभी दीवारों में आर.सी.सी. बैंड बनाएं, सभी दीवार के कोनों एवं किनारों पर कंक्रीट पॉकेट के अंदर स्टील के छड़ का प्रयोग करें। ढालदार छत पर खपरैल के बदले स्टील शीट लगाएं, ढालदार छतों को आँधी से बचाव हेतु एक या दो तरफ ढाल के बदले, चारों तरफ ढलान वाला छत बनाना चाहिए।

आर.सी.सी. बीम-पीलर फ्रेम वाले भवनों के लिए :-

भूतल के मंजिल पर खुली पार्किंग वाले भवनों में, खुली मंजिल पर, बड़े आकार के पीलर या तिरछा बन्धनी या आर.सी.सी. Shear Wall या पीलरों के बीच दीवार बनायी जानी चाहिए। अंग्रेजी के L, T, E तथा Y अक्षरों वाले भवन के नक्शे में आकृतियों को लगभग सरल आयताकार खंडों में पृथक् कर देना चाहिए एवं इन आयताकार खंडों की लम्बाई, इसकी चौड़ाई के तीन गुने से कम रखनी चाहिए।

ईंट जोड़ाई की दीवार पर छत रखकर बनाए गये भवनों की रेट्रोफिटिंग :-

यदि आपका मकान ईंट जोड़ाई भारवाहक दीवार पर आधारित है एवं भूकम्परोधी अंगों के बिना, परम्परागत ढंग से बना हुआ है, तो, यह भूकम्प सुरक्षा के दृष्टिकोण से खतरनाक है। अपने मकान की भूकम्प सुरक्षा की स्वयं जांच कर लें। भूकम्पीय पट्टी (बेल्ट) के द्वारा मकान का सुदृढ़ीकरण करायें। विस्तृत जानकारी हेतु बिहार राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण द्वारा प्रकाशित आर.वी.एस. एवं रेट्रोफिटिंग मार्गदर्शिका bsdma.org पर देखें।

चक्रवाती तूफान



MARCH फाल्गुन-चैत्र
मार्च 2017

MON TUE WED THU FRI SAT SUN

			1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12	
13	14	15	16	17	18	19	
20	21	22	23	24	25	26	
27	28	29	30	31			

आपदा प्रबंधन का उचित ज्ञान । बचा सकता है सबकी जान ॥

होली
बिहार दिवस

13-14 मार्च
22 मार्च

चक्रवाती तूफान

गर्मी के मौसम में कमोबेश राज्य के सभी जिलों में चक्रवाती तूफान आते हैं। राज्य के पूर्वोत्तर जिलों में वर्ष 2010 एवं 2015 में चक्रवाती तूफान के कारण जन-जीवन कुप्रभावित हुआ था। चक्रवाती तूफान के कारण जन-धन की भारी क्षति हुई थी। चक्रवाती तूफान के अलावा गर्मी के मौसम में राज्य के कमोबेश सभी जिलों में आंधी की घटनाओं के चलते जन-धन की क्षति होती है।

चक्रवाती तूफान/आंधी से बचने के उपाय:-

- जब तक आंधी तूफान शांत न हो जाय, तब तक बाहर न निकलें।
- आवास में ऊपरी तलों की अपेक्षा भूतल पर रहें।
- पेड़ों के नीचे न रहें।
- बाहर निकलने के पहले आश्वस्त हो लें कि आंधी-तूफान थम गया है।
- रेडियो और टी.वी. पर मौसम के साफ होने का संदेश प्रसारित होने का इंतजार करें।
- पुराने और क्षतिग्रस्त भवनों और पेड़ों के नजदीक आश्रय लेने से बचें।
- बिजली और टेलीफोन के खंभों के नीचे न खड़े हों। खंभों के गिरने से शारीरिक क्षति हो सकती है।
- घर से बाहर होने पर किसी छतदार मकान में आश्रय लें।

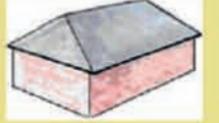
टीन/एस्बेस्टस की ढालदार छत वाले घरों का चक्रवाती तूफान या आँधी से बचाव के उपाय :

वायु गति के प्रभाव से बचने के लिये, एक या दो तरफ ढाल के बदले, चारों तरफ ढलान वाले छत बनाने चाहिए। वर्षा से दीवारों के बचाव हेतु चारों तरफ छत 18 ईंच तक लटका सकते हैं। लटके हुए कड़ी के अंतिम पर्लिन को दीवार के साथ कसकर बाँधना चाहिए।

फाल्गुन-चैत्र
MARCH
मार्च
2017



- वायु चूषण के कारण छत को ऊपर उठने के प्रभाव को कम करने के लिए, छत का ढाल 2:1 (2 पड़े : 1 खड़े) अपनाएं।
- स्टील चादर वाली छतों के संरचना ढाँचे में बाँस की मुख्य कड़ी 600 मि.मी. से अधिक दूरी पर नहीं रखी जाये। खपरैल छतों में यह 300 मि.मी. से अधिक नहीं होनी चाहिए। खपरैल छतों में तार (GI Wire) से तिरछा बन्धनी लगाएं।
- छत के जस्ती स्टील चादर (GI Sheet) को, अलकतरा वाशर एवं लोहे के वाशर के साथ, J बोल्ट के सहारे या पेंच के सहारे, छत की कड़ी (पर्लिन) से जकड़ दें।
- जहाँ आँधी का प्रकोप ज्यादा हो तो U बोल्ट लगायें। यदि टोपीदार कील का उपयोग करना हो तो, वे इतने लम्बे हों कि कड़ी की दूसरी तरफ कील पार कराकर मोड़ा जा सके। इन कीलों अथवा J बोल्टों की परस्पर दूरी 18 ईंच से ज्यादा नहीं होना चाहिए। छत के निचले भाग के उपर स्टील की बत्ती लगाकर, J बोल्ट के सहारे सबसे निचले पर्लिन के साथ बाँध सकते हैं।



नोट :- हल्के सामग्री से बने छत जो दीवार के साथ सुदृढ़ता पूर्वक न जुड़े हों वो उड़ सकते हैं।

भूकम्प



पर्यावरण की रक्षा में दीजिए योगदान । प्राणी जगत की रक्षा में कीजिए महादान ॥

APRIL

चैत्र-बैशाख

अप्रैल 2017

MON TUE WED THU FRI SAT SUN

1 2

3 4 5 6 7 8 9

10 11 12 13 14 15 16

17 18 19 20 21 22 23

24 25 26 27 28 29 30

राम नवमी
महावीर जयंती
वैशाखी
डा. अम्बेडकर जयंती / गुडफ्राइडे
चम्पारण सत्याग्रह शताब्दी वर्ष
वीर कुंवर सिंह जयंती

14-20 अप्रैल
अग्नि सुरक्षा सप्ताह

05 अप्रैल
09 अप्रैल
13 अप्रैल
14 अप्रैल
17-18 अप्रैल
23 अप्रैल

भूकम्प

बिहार भूकम्प प्रवण राज्य है। हमारे 8 जिले भूकम्प के सर्वाधिक खतरनाक जोन V तथा शेष जिले जोन IV एवं III में आते हैं। सुपौल एवं मधुबनी जिले का संपूर्ण हिस्सा जोन V के अंतर्गत आता है। जोन III में आने वाले जिले हैं बक्सर, कैमूर, रोहतास, अरवल, औरंगाबाद एवं गया।

राज्य में वर्ष 1934, 1988 एवं 2015 में बड़े भूकम्प की घटनाएं हुई थीं, जिसमें जन-धन की भारी क्षति हुई थी। भूकम्प आने पर बचाव हेतु कुछ महत्वपूर्ण बातों पर अमल करना चाहिए :-



चैत्र-बैशाख
APRIL

अप्रैल
2017

भूकम्प से बचाव : आपदा नहीं हो भारी, यदि पूरी हो तैयारी।

भूकम्प से पहले



घर को सुदृढ़ कर भूकम्परोधी बनाएँ।



भारी एवं शीशे का सामान निचले खाने में रखें।



अलमारी को वलैम्प से, दीवार में जकड़ दें।



बचाव एवं प्राथमिक उपचार का प्रशिक्षण लें।



झुको-ढको-पकड़ो का नियमित रिहर्सल करें।



आवश्यक सामान के साथ सुरक्षा किट तैयार रखें।



अपने आस-पास सुरक्षित स्थलों की पहचान कर लें।

भूकम्पन के समय



हड़बड़ाकर मत भागें।



कमरे के अंदरूनी कोने के पास रहें।



मजबूत टेबुल या उंचे पलंग के नीचे छिप जाएँ।



गिरने वाले चीजों से दूर रहें।



तिर को बचाएँ।



यदि गाड़ी चला रहे हों, तो सड़क के किनारे रुकें, पुल पर न चढ़ें।



यदि सिनेमा या मॉल में हों, तो अपनी जगह पर शांत रहें, झटका रुकने पर, क्रम से बाहर निकलें।

इमरजेंसी फोन :-
पुलिस 100
अग्निशमन 101
एम्बुलेंस 102, 108
आपदा निबंधन कक्ष, पटना 0612-2217305

भूकम्प का झटका रुकने पर



गैस सिलिन्डर बन्द करें।



मेन स्वीच ऑफ करें।



घर से बाहर निकलें।



लिफ्ट का उपयोग न करें।



सीढ़ी से उतरें।



गिरने वाली चीजों से तिर को बचाएँ।



बिजली पोल, विज्ञापन बोर्ड, पेड़ से दूर रहें।



खुले मैदान में आ जाएँ, पायलों की सहायता करें।

अगलगी / लू



MAY
मई 2017
बैशाख-ज्येष्ठ

MON TUE WED THU FRI SAT SUN

1 2 3 4 5 6 7

8 9 10 11 12 13 14

15 16 17 18 19 20 21

22 23 24 25 26 27 28

29 30 31

श्रम दिवस 01 मई
जानकी नवमी 04 मई
बुद्ध पूर्णिमा 10 मई
शब-ए-बरात 12 मई

आपदाओं से रक्षा हेतु मानो एक सुझाव । बेहतर पूर्व तैयारी से ही होता है बचाव ॥

अगलगी/लू

गर्मी के दिनों में जब पछुआ हवा तेजी से चलती है तो हमारे गांवों में अगलगी की घटनाएं बड़े पैमाने पर होती हैं। हमारे घर, खेत, खलिहान एवं जान-माल को अगलगी से भारी क्षति पहुंचती है। इसके अलावा गर्मी के महीनों में लू भी चलती है। लू से मौत भी हो सकती है।



बैशाख-ज्येष्ठ
MAY
मई
2017

अगलगी से बचाव हेतु उपाय :

- रसोई घर यदि फूस का हो तो उसकी दीवाल पर मिट्टी का लेप अवश्य कर दें।
- रसोई घर की छत उंची रखी जाये।
- आग बुझाने के लिए बालू अथवा मिट्टी बोरे में भरकर तथा दो बाल्टी पानी अवश्य रखें।
- दीपक (दीया), लालटेन, मोमबत्ती को ऐसी जगहों पर न रखें जहाँ से गिरकर आग लगने की संभावना हो।
- शार्ट सर्किट की आग से बचने के लिए बिजली वायरिंग की समय पर मरम्मत करा लें।
- मवेशियों को आग से बचाने के लिए मवेशी घर के पास पर्याप्त मात्रा में पानी का इंतजाम एवं निगरानी अवश्य करते रहें।
- घर में किसी भी उत्सव के लिए लगाये कनात अथवा टेण्ट के नीचे से बिजली के तार को न ले जायें।
- जहां पर सामूहिक भोजन इत्यादि का कार्य हो रहा हो, वहां पर दो से तीन ड्रम पानी अवश्य रखा जाये। भोजन बनाने का कार्य तेज हवा के समय नहीं किया जाये।
- जलती हुई माचिस की तीली अथवा अधजली बीड़ी एवं सिगरेट पीकर इधर-उधर ना फेंकें।
- दीपावली में पटाखे जलाते समय पानी की बाल्टी तथा रेत की पर्याप्त व्यवस्था रखें।

- खाना बनाते समय ढीले ढाले और पॉलिस्टर के कपड़े पहनकर खाना ना बनायें, हमेशा सूती कपड़ा पहन कर ही खाना बनायें।
- जहाँ तक संभव हो खाना शाम ढलने से पहले बना लें।
- सार्वजनिक स्थलों, ट्रेनों एवं बसों आदि में ज्वलनशील पदार्थ लेकर न चलें।
- ग्रामीण क्षेत्रों में हरा गेहूँ, खेसारी, छिमी भी बच्चे लाकर भूनते है। ऐसे में आग लगने से बचने के लिए उनपर निगरानी रखें।
- आग लगने पर समुदाय के सहयोग से आग बुझाने का प्रयास करें।
- फायर बिग्रेड (101 नम्बर) एवं प्रशासन को तुरंत सूचित करें एवं उन्हें सहयोग करें।
- अगर कपड़ों में आग लगे तो उन्हें जमीन पर लेटकर बुझाने का प्रयास करें।

लू से बचने के उपाय :-

- लू का लक्षण तेज बुखार एवं लगातार उल्टी का होना होता है।
- बच्चे लू में घर से बाहर न निकलें।
- यदि घर से बाहर निकलना जरूरी हो तो भरपेट पानी पीकर निकलें।
- तौलिया/गमछा भिगो कर सिर पर रखें और चेहरा पोछकर चलें।
- चेहरा ढक कर एवं पूरे कपड़े पहन कर ही घर से चलें।

लू लगने पर क्या करें :-

- लू लगने पर आम का पन्ना पियें।
- पीड़ित को तुरंत अस्पताल में भर्ती करायें तथा चिकित्सक की सलाह लें।

ठनका / वज्रपात



ईमानदारी, मेहनत, धैर्य और भाईचारा । आपदा के समय भी, यही है सहारा ॥

JUNE ज्येष्ठ-आषाढ़
जून 2017

MON TUE WED THU FRI SAT SUN

1 2 3 4

5 6 7 8 9 10 11

12 13 14 15 16 17 18

19 20 21 22 23 24 25

26 27 28 29 30

01-07 जून
बाढ़ सुरक्षा सप्ताह

कबीर जयंती
ईदुल-फित्र (ईद)

09 जून
26 जून

ठनका/वज्रपात

बरसात के दिनों में प्रायः आसमान में बिजली कड़कती/चमकती है तथा आसमानी बिजली गिरने से आमजन प्रभावित होते हैं। इससे बचने हेतु निम्न सुझाव पर अमल करना चाहिए।

आमजनों को वज्रपात (ठनका) से बचाव के उपाय :

- पक्के मकान में ही आश्रय लें।
- सफर के दौरान अपने वाहन में ही बने रहें।
- खिड़कियाँ, दरवाजे, बरामदे एवं छत से दूर रहें।
- ऐसी वस्तुएँ जो बिजली की सुचालक हैं, उनसे दूर रहें।
- बिजली से संचालित उपकरणों से दूर रहें, टेलीफोन/मोबाइल का उपयोग न करें।
- तालाब और जलाशयों से दूर रहें।
- उँचे वृक्ष आसमानी बिजली को आकर्षित करते हैं, कृपया उनके नीचे न खड़े रहें।
- उँची इमारतों वाले क्षेत्र में आश्रय न ले।
- समूह में न खड़े हों, बल्कि अलग-अलग खड़े रहें।
- बाहर रहने पर धातु से बनी वस्तुओं का उपयोग न करें। बाईक, बिजली या टेलीफोन का खंभा, तार की बाड़, मशीन आदि से दूर रहें।
- आसमानी बिजली के झटके से घायल होने पर जरूरत के अनुसार व्यक्ति को कृत्रिम श्वास देनी चाहिए एवं उन्हें तत्काल नजदीकी प्राथमिक चिकित्सा केन्द्र ले जाने की व्यवस्था की जानी चाहिए।

ज्येष्ठ-आषाढ़

JUNE
जून
2017



सुखाड़



JULY
जुलाई 2017

आषाढ-सावन

MON TUE WED THU FRI SAT SUN

1 2

3 4 5 6 7 8 9

10 11 12 13 14 15 16

17 18 19 20 21 22 23

24 25 26 27 28 29 30

31

01-15 जुलाई
स्कूल सुरक्षा पखवाड़ा

04 जुलाई
स्कूल सुरक्षा दिवस

गुरु पूर्णिमा

09 जुलाई

पानी जीवन का आधार । बिन पानी सूना संसार ॥

सुखाड़

वर्षा ऋतु में लम्बे समय तक अल्प वर्षापात एवं जल चक्र के असंतुलन के कारण सुखाड़ की स्थिति उत्पन्न होती है। सुखाड़ की स्थिति में जल की उपलब्धता में कमी फसलों को नुकसान पहुंचाती है जिसके कारण कालान्तर में अनाज की पैदावार में कमी हो जाती है। सुखाड़ से उत्पन्न स्थिति में ग्रामीण बच्चों को पढ़ाई छोड़कर अपने माता-पिता को जीवन यापन में मदद करने के लिए मजदूरी भी करनी पड़ती है। इससे उनके स्वास्थ्य पर बुरा असर पड़ता है। सुखाड़ एक मंद गति से आने वाली आपदा है, जिसका असर लम्बे समय तक देखने में आता है। सुखाड़ का सर्वाधिक कुप्रभाव कृषि एवं संबंधित क्षेत्रों जैसे पशुधन आदि पर पड़ता है।

सुखाड़ की स्थिति की रोकथाम हेतु क्या करें :

- खेतों में मेड़ एवं चेक डैम बनाकर वर्षा जल को संग्रहित कर सिंचाई की जा सकती है।
- वर्षा जल की गुणवत्ता पीने योग्य सबसे उत्तम है। इसलिए विभिन्न उपाय कर वर्षा जल का संचयन करें।
- स्थानीय कृषि विकास केन्द्र से संपर्क कर आकस्मिक फसल योजना की जानकारी प्राप्त करें।
- फसलों की बुआई के पूर्व फसल बीमा करा लें।

सुखाड़ होने पर :

- पेय जल के लिए पुराने चापाकलों की मरम्मत सुनिश्चित करें और वर्षा जल संचयन करें।
- पशुओं के लिए पर्याप्त चारा का प्रबंधन करें एवं पशु चिकित्सालय से निरंतर पशुओं की जाँच करायें।

आषाढ-सावन
JULY
जुलाई
2017

- फसल की बुआई हेतु बैंक से ऋण प्राप्त करने के लिए किसान क्रेडिट कार्ड का उपयोग करें।
- जल को बर्बाद होने से बचायें। यदि आवश्यकता हो तो उसका उपयोग फसलों/फलों/सब्जियों की सिंचाई हेतु करें।

सुखाड़ की स्थिति में क्या न करें :

- कृषि कार्य एवं पीने के लिए संचित जल को बेकार न बहने दें और उसे दूषित न करें।
- दूषित पेय जल का उपयोग पीने हेतु नहीं करें।
- पशुओं को खुले धूप में ज्यादा देर तक न छोड़ें।
- कम सिंचाई की आवश्यकता वाली फसलों की बुआई करें।



बाढ़



AUGUST
अगस्त 2017

सावन-भाद्रपद

MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT	SUN
	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27
28	29	30	31			

बाढ़ हो या कोई प्राकृतिक आपदा ।करना है सामना नहीं है घबराना ।।

अंतिम श्रावणी / रक्षा बंधन
स्वतंत्रा दिवस / जन्माष्टमी
गणेश चौथ

07 अगस्त
15 अगस्त
25 अगस्त

बाढ़



सावन-भाद्रपद
AUGUST
अगस्त
2017

बिहार भारत के सर्वाधिक बाढ़ग्रस्त राज्यों में से एक है। राज्य के 28 जिले बाढ़ प्रवण हैं, जिनमें से 15 जिले अति बाढ़ प्रवण है। राज्य की कुल आबादी के लगभग 76 प्रतिशत लोग बाढ़ प्रवण क्षेत्र में रहते हैं। नेपाल से सटा बिहार का मैदानी इलाका कोसी, महानंदा, गंडक, बूढ़ी गंडक, कमला बलान, बागमती, अधवारा समूह की नदियों का क्षेत्र है, जो बाढ़ से सर्वाधिक प्रभावित होता है। गंगा नदी बिहार में बक्सर से कटिहार तक गुजरती है, जिसके किनारे बसे 12 जिले अक्सर बाढ़ से प्रभावित होते हैं एवं सोन, पुनपुन तथा फल्गु नदियों में भी समय समय पर बाढ़ आती है। अन्य छोटी-छोटी नदियां भी बिहार को प्रभावित करती हैं।

- अगर आपका घर बाढ़ प्रभावित क्षेत्र में हो तो मकान मजबूती से सीमेंट आदि से बनवाएं। बाढ़ से मिट्टी के घर सबसे जल्दी ढह जाते हैं।
- घर के सभी सदस्यों को नजदीकी सुरक्षित आश्रय का पता हो।
- आपातकालीन किट हमेशा अपने पास रखें, जिसमें एक छोटा रेडियो, टॉर्च, बैटरी, मजबूत रस्सी, माचिस, मोमबत्ती, पानी, सूखा भोजन, खाद्य सामग्री आदि हों।

- पॉलीथीन बैग या वाटरप्रूफ बैग आदि रखें जिसमें कपड़े, महंगे सामान, छाता, चीनी, नमक, और लकड़ी (सांप वगैरह भगाने के लिए) हों।
- मजबूत रस्सी एवं एक लम्बी लकड़ी अपने पास हमेशा रखें।
- चेतावनी व सुझाव के लिए रेडियो सुनें या टी वी देखें और स्थानीय अधिकारियों की चेतावनियों पर ध्यान रखें।
- अफवाह पर ध्यान न दें और न ही घबराएँ।
- बाढ़ से पहले बैलगाड़ी, कृषि उपयुक्त समान और पालतू जानवरों को उँची सुरक्षित जगह पर ले जाएं।
- बाढ़ के दौरान खाना ढक कर रखें। हल्का भोजन करें एवं उबला हुआ पानी पिएं।
- चाय, चावल का पानी, नारियल पानी आदि का दस्त के समय सेवन करें और ORS व अन्य उपचार के लिए अपने नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र को संपर्क करें।
- बाढ़ पीड़ितों को राहत समग्री बांटने में मदद करें।
- सबसे पहले गर्म कपड़े, जरूरी दवाएँ, कीमती वस्तुएं, निजी कागज आदि को वॉटर प्रूफ बैग में डाल कर उन्हें आपातकालीन बाक्स में अपने साथ रख लें।
- अगर पानी की गहराई की जानकारी न हो तो उसे कभी भी पार करने की कोशिश न करें।
- ऐसा कोई भी खाद्य पदार्थ का सेवन न करें जो कि बाढ़ के पानी से प्रभावित हुआ हो।
- नल के पानी को उबालकर तब तक पिएं जब तक कि संबंधित विभाग द्वारा हैलोजेन की गोलियां पानी में डालने के लिए उपलब्ध न करा दी गई हों।
- सांपों एवं अन्य जहरीले जन्तुओं से बचकर रहें।
- बच्चों को बाढ़ के पानी के पास खेलने से रोकें।

डूबना (Drowning)



जन-जन का हैं यही संदेश । आपदा रहित हो मेरा देश ॥

SEPTEMBER

सितंबर 2017

भाद्रपद-आश्विन

MON TUE WED THU FRI SAT SUN

				1	2	3
4	5	6	7	8	9	10
11	12	13	14	15	16	17
18	19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30	

ईदुल-जोहा (बकरीद)
शिक्षक दिवस / अनन्त चतुर्दशी
हिन्दी दिवस
विश्वकर्मा पूजा
दुर्गा पूजा केलश-स्थापन
दुर्गा पूजा (साप्तमी / दुर्गाष्टमी / महानवमी)
विजयदशमी

03 सितंबर
05 सितंबर
14 सितंबर
17 सितंबर
21 सितंबर
27-29 सितंबर
30 सितंबर

डूबना (Drowning)

वर्षा ऋतु में उफनायी नदियों / तालाबों में स्नान करने, कपड़ा एवं बर्तन धोने जैसे रोजाना के काम के दौरान किशोर / किशोरियों की मृत्यु डूबने के कारण हो जाती है। यह स्थिति संबन्धित परिवारों के लिए त्रासद है। इन बहुमूल्य जिंदगियों को बचाने के लिए निम्नलिखित बातों पर ध्यान दें -

- खतरनाक घाटों के किनारे न जाएँ और न ही बच्चों को जाने दें।
- बच्चों को नदी / तालाबों / तेज पानी के बहाव में स्नान करने से रोकें।
- बच्चों को पुल / पुलिया / ऊंचे टीलों से पानी में कूद कर स्नान करने से रोकें।
- नदी में उतरते समय गहराई का ध्यान रखें।
- यदि तैरना जानते हों तभी नदियों / तालाबों / घाटों के किनारे जाएँ।
- डूबते व्यक्ति को धोती, साड़ी, रस्सी या बांस की सहायता से बचाएं तथा तैरना नहीं जानते हों तो स्वयं पानी में न जाएँ और सहायता के लिए शोर मचाएँ।
- गाँव / टोले में डूबने की घटना होने पर आस-पास के लोग आपस में एकत्रित होकर ऐसी दुखद घटना की चर्चा अवश्य करें, और भविष्य के सुरक्षा उपायों पर चर्चा करें।



भाद्रपद-आश्विन
SEPTEMBER
सितंबर
2017



डूबे हुये व्यक्ति को पानी से निकाल कर तत्काल प्राथमिक उपचार निम्न प्रकार करें :

- सबसे पहले देख लें कि डूबे हुये व्यक्ति के मुँह व नाक में कुछ फंसा हो तो निकाल दें।
- नाक व मुँह पर उँगलियों के स्पर्श से जांच कर लें कि डूबे हुये व्यक्ति की सांस चल रही है कि नहीं।
- नब्ज की जांच करने के लिए गले में किनारे के हिस्सों में उँगलियों से छू कर जानकरी प्राप्त करें कि नस चल रही है कि नहीं।
- नब्ज व सांस का नहीं पता चलने पर डूबे व्यक्ति के मुँह से मुँह लगाकर दो बार भरपूर सांस दें व 30 बार छाती के बीच में दबाव दें तथा इस विधि 3-4 बार दुहराएँ। ऐसा करने से धड़कन वापस आ सकती है व सांस चलना शुरू हो सकती है।
- यदि डूबा हुआ व्यक्ति खाँस/ बोल/ सांस ले सकने की स्थिति में है तो उसे ऐसा करने के लिये प्रोत्साहित करें।
- यदि डूबे हुये व्यक्ति का पेट फूला हुआ है तो पूरी संभावना है कि उसने पानी पी लिया होगा, अतः पेट से पानी निकालने की प्रक्रिया शुरू करें।
- उपरोक्त प्रक्रिया के बाद बचाए गए व्यक्ति को नजदीकी डॉक्टर अथवा प्राथमिक चिकित्सा केंद्र पर ले जाएँ।
- डॉक्टर या प्राथमिक चिकित्सा केंद्र पर ले जाने के लिए स्थानीय स्तर पर जो भी साधन उपलब्ध हो उसका प्रयोग करें या 108 / 102 पर फोन कर एम्बुलेन्स बुला लें।

भगदड़



आपदा देती सीख यही । लापरवाही ठीक नहीं ॥

OCTOBER आश्विन-कार्तिक
अक्टूबर 2017

MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT	SUN
						1
2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15
16	17	18	19	20	21	22
23	24	25	26	27	28	29
30	31					

मोहरम
महात्मा गांधी जयंती
जय प्रकाश नारायण जयंती
दीपावली
चित्रगुप्त पूजा / माई पूजा
छठ पूजा (खरना)

01 अक्टूबर
02 अक्टूबर
11 अक्टूबर
19 अक्टूबर
21 अक्टूबर
26-27 अक्टूबर

भगदड़

बिहार में दशहरा, दुर्गापूजा, छठ के अवसर पर बहुत भीड़ होती है जिसमें भगदड़ हो सकती है। जिसमें ज्यादातर मरने वाले बच्चों एवं महिलाएं होते हैं। अतः इन्हें नियंत्रित करने की आवश्यकता होती है।

भीड़-भाड़ वाले स्थानों में ध्यान रखें ये सुझाव :

- भीड़-भाड़ वाले स्थानों जैसे धार्मिक पूजा स्थल, मेले, उत्सवों आदि में सावधान रहें व अनुशासित तरीके से चलें।
- बेवजह शोर न मचायें, अफवाहें न फैलायें और साथ ही दूसरों को भी ऐसा करने से रोकें।
- यदि संभव हो तो बच्चों, बुजुर्गों व विकलांगों को अधिक भीड़-भाड़ वाले स्थानों पर न ले जाएं।
- जल्दबाजी न करें। यदि आगे चलता कोई व्यक्ति गिर जाता है तो उसकी सहायता करें।

भगदड़ की स्थिति में ध्यान रखें ये सुझाव :

- भगदड़ मचने की स्थिति में संयम व धैर्य बनाए रखें व यदि संभव हो तो भगदड़ वाले मार्ग से हट जाएँ।
- स्थिति सामान्य होने पर घायल व्यक्तियों को रास्ते से उठाकर पास के सुरक्षित स्थान पर ले जाकर उनकी सहायता करें।
- घायलों के इर्द गिर्द भीड़ न इकट्ठी होने दें व हवा आने दें, क्योंकि भगदड़ में अधिकतर लोग दम घुटने से बेहोश हो जाते हैं।
- पुलिस व राहत कर्मियों को उनके कार्य में सहयोग करें।

आश्विन-कार्तिक
OCTUBER
अक्टूबर
2017



नाव दुर्घटना

NOVEMBER कार्तिक-अगहन
नवम्बर 2017

MON	TUE	WED	THU	FRI	SAT	SUN
		1	2	3	4	5
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29	30			

क्षमता 25 व्यक्ति

अगर करोगे प्रकृति से छेड़-छाड़ । तो पाओगे भूकंप, बाढ़ और सुखाड़ ॥

गुरु नानक जयंती
चेहल्लुम

04 नवम्बर
10 नवम्बर

नाव दुर्घटना

वर्षा ऋतु में उफनायी नदियों में नाव डूबने की दुर्घटना में बहुमूल्य जिंदगियां चली जाती हैं, जिन्हें रोका जा सकता है, अगर हम नाव दुर्घटना से बचने के उपाय कर लें।



कार्तिक-अगहन
NOVEMBER

नवम्बर
2017

नाव दुर्घटना से बचने के उपाय

नाव की सवारी करने वालों के लिए सलाह :-

- जिस नाव पर पंजीकरण संख्या अंकित हो उसी नाव से यात्रा करें।
- जिस नाव पर लदान क्षमता दर्शाते हुए सफेद पट्टी का निशान लगा हो उसी नाव से यात्रा करें।
- किसी भी स्थिति में ओवर लोडेड नाव पर न बैठें।
- नाव चलने के पहले देख लें कि लदान क्षमता दर्शाने वाला सफेद पट्टी का निशान डूबा तो नहीं है। अगर डूबा है तो तुरंत उतर जायें।
- जब बारिश हो रही तो नाव की यात्रा न करें।
- छोटे बच्चों को अकेले नाव की यात्रा न करने दें।
- जिस नाव पर जानवर ढोये जा रहे हों तो उसमें यात्रा न करें।
- जर्जर/टूटी फूटी नाव पर सवारी न करें। यह जानलेवा हो सकता है।
- जिस नाव पर जीवन रक्षा के लिए लाईफ जैकेट, लाईफ बॉय के साथ प्राथमिक चिकित्सा बॉक्स एवं रस्से आदि ठीक तरीके से रखे हों उसी नाव से यात्रा करें।
- नाव में यात्रा के दौरान शांत बैठें व उतरते-चढ़ते समय क्रम से ही नाविक के निर्देशानुसार उतरें व चढ़ें।
- सूर्योदय से पहले और सूर्यास्त के बाद नाव की यात्रा न करें। यह खतरनाक हो सकता है।

- नाव यात्रा के दौरान किसी तरह की जल्दीबाजी न दिखाएँ और नाविक के उपर किसी तरह का दबाव न डालें।

नाविक एवं नाव मालिकों के लिए सलाह :-

- जब तेज हवा/खराब मौसम/आंधी/बारिश हो रही हो तो नाव का संचालन न करें।
- जिस नाव पर 15 से 30 लोगों की सवारी बैठती हो तो उस नाव पर दो नाविक होना अनिवार्य है तथा 30 से उपर बैठाने वाली बड़ी नाव पर 3 नाविक का होना अनिवार्य है।
- बीमार व्यक्तियों/गर्भवती माता को नाव पर चढ़ाने में प्राथमिकता दें।
- किसी यात्री को किसी भी दशा में नाव संचालन न दें।
- नाव पर किसी तरह का नशा सेवन करने से यात्रियों को रोकें।
- जिस नाव में जानवर ढोया जा रहा हो तो उस नाव में जानवर के मालिक के अलावा अन्य सवारी न बैठाएँ।
- किसी भी तरह की नाव, चाहे उस पर सवारी ढोयी जा रही हो अथवा जानवर या सामान, सभी नाव पर लदान क्षमता का निशान लगाना अनिवार्य है।
- नाव पर ऐसा कोई भी सामान या खतरनाक सामग्री, साँप आदि नहीं ढोया जाएगा, जिस से अन्य यात्रियों को किसी प्रकार का खतरा उत्पन्न होता हो।
- नाव से पानी निकालने/उलीचने के लिए नाव में आवश्यक बर्तन रखें।
- रात में नाव का परिचालन न करें। यदि आवश्यक हो तो सक्षम प्राधिकार की अनुमति प्राप्त कर विशेष रोशनी के साथ करें।
- मानसून अवधि में सूर्योदय के पूर्व एवं 5:30 बजे शाम के बाद नाव का परिचालन न करें।

रेल/सड़क दुर्घटना



सड़क सुरक्षा न हो केवल नारा । बना लो इसको जीवन की धारा ॥

DECEMBER

अगहन पौष

दिसंबर 2017

MON TUE WED THU FRI SAT SUN

					1	2	3
4	5	6	7	8	9	10	
11	12	13	14	15	16	17	
18	19	20	21	22	23	24	
25	26	27	28	29	30	31	

हजरत मोहम्मद साहब का जन्म दिवस
डॉ० राजेन्द्र प्रसाद जयंती
क्रिसमस डे/गुरुगोविंद सिंह जन्म दिवस

02 दिसंबर
03 दिसंबर
25 दिसंबर

रेल/सड़क दुर्घटना

बिहार में रेल और सड़क दुर्घटनाएं काफी भारी संख्या में होती हैं। नई-नई सड़कों के निर्माण एवं गाड़ियों की बढ़ती संख्या से भी दुर्घटनाएं बढ़ रही हैं क्योंकि ऐसा देखा गया है कि हम सुरक्षा के नियमों का पालन नहीं करते। रेल दुर्घटना मानव जनित आपदा के अंतर्गत आता है। आम तौर पर रेल दुर्घटनाएं ट्रेन के पटरी से उतरने पर होती है। कई बार टक्कर भी होती है।

रेल सुरक्षा के उपाय —

- रेल विभाग द्वारा स्टेशनों पर या रेलगाड़ी में दी जाने वाली सूचनाओं का पालन करें।
- रेल फाटक पार करते समय रेलवे लाइन के दोनों ओर देखें।
- रेल की पटरी पर न चलें, न ही रेल लाइन के आसपास शौच करें।
- रेल फाटक या रेल लाइन के आसपास कान में इयरफोन लगा कर न चलें।
- ट्रेन में डिब्बों के बीच में या डिब्बों के ऊपर बैठकर यात्रा न करें।
- ट्रेन के दरवाजों से न लटकें।
- किसी प्रकार की दुर्घटना होने पर तुरंत निकटतम रेलवे स्टेशन या जिला प्रशासन को सूचना दें।
- ट्रेन में किसी प्रकार का ज्वलनशील या विस्फोटक पदार्थ ले कर यात्रा न करें।
- ट्रेन में किसी अपरिचित द्वारा दिया गया कोई खाद्य पदार्थ का सेवन न करें।
- ट्रेन यात्रा करते समय बच्चों का विशेष ध्यान रखें।



अगहन पौष
DECEMBER
दिसंबर
2017



सड़क सुरक्षा के उपाय :-

- सड़क पार करते समय हमेशा दायें और बायें देख कर पार करें।
- सड़क पर चलते समय या सड़क पार करते समय कान में इयरफोन लगा कर न चलें।
- जेब्रा लाइन से ही सड़क पार करें।
- वाहन हमेशा सड़क के बायीं ओर और निर्धारित गति सीमा में चलायें।
- दुपहिया वाहन चालक और उनके पीछे बैठने वाली सवारी हमेशा हेलमेट पहन कर चलें।
- कार या अन्य चार पहिया वाहन या उससे बड़े वाहन चालक हमेशा सीट बेल्ट बांध कर गाड़ी चलायें।
- नशे की हालत में गाड़ी न चलायें।
- ट्रैफिक के नियमों और संकेतों का पालन करें।
- दायें या बायें मुड़ते समय, गाड़ी रोकते समय, गाड़ी धीमे करते समय संकेतक (Indicator) अवश्य दें।
- किसी सड़क दुर्घटना में घायल व्यक्ति को तुरंत प्राथमिक उपचार दें और उसे तुरंत किसी नजदीकी चिकित्सालय में ले जायें।
- वाहन सवार एवं पैदल यात्री एम्बुलेंस के जाने के लिए रास्ता छोड़ दें।
- दरवाजा खोलते समय सावधानी बरतें।
- सड़क के बायें चलें एवं सभी सड़क चिन्हों का अनुपालन करें।
- सड़क का चौराहा/तिराहा आने के पूर्व वाहन की गति धीमी कर लें एवं उसे पार करने के पूर्व सावधानी बरतें।